CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

सीकर जिले में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

अंजना
बी.एड. एम.एड. छात्रा
श्रीमती विनिता शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
Email- Id : anjana24051999@gmail.com Mobile- 8619694836

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यौन शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील विषय के रूप में उभरकर सामने आया है। यह केवल जैविक तथ्यों की जानकारी तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य, सुरक्षा, लैंगिक समानता, प्रजनन संबंधी ज्ञान, व्यक्तिगत स्वच्छता, तथा सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के मध्य यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा का स्तर महिलाओं की यौन शिक्षा संबंधी समझ, जागरूकता, स्वीकार्यता तथा दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करता है। शिक्षित महिलाओं में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक सोच तथा सकारात्मक दृष्टिकोण की संभावना अधिक होती है, जबकि अशिक्षित महिलाओं में सामाजिक रूढ़ियों, संकोच तथा जानकारी के अभाव के कारण इसके प्रति दृष्टिकोण भिन्न हो सकता है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा। शोध हेतु शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के दो पृथक समूहों का चयन किया जाएगा। तथ्यों के संकलन के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा अवलोकन तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया जाएगा ताकि दोनों समूहों के दृष्टिकोण में अंतर को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। यह अध्ययन महिलाओं में यौन शिक्षा के महत्व, उसकी आवश्यकता तथा सामाजिक जागरूकता को बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही यह शोध शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं स्वास्थ्य जागरूकता से संबंधित नीतियों के निर्माण में भी सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्दः *शिक्षित महिलाएँ, अशिक्षित महिलाएँ, यौन शिक्षा, दृष्टिकोण, जागरूकता, महिला स्वास्थ्य, सामाजिक दृष्टि, महिला सशक्तिकरण।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा को जीवन के सम्पूर्ण विकास का महत्वपूर्ण पहलू निर्धारित किया गया है। इस कारण शिक्षा का तीव्र प्रचार–प्रसार हो रहा है। स्वस्थ लोग ही किसी देश की सबसे बड़ी पूंजी हैं। शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर स्वस्थ रहने के लिए दबाव के कारण गलत रास्ते पर जानपे की संभावना जानकारी की आवश्यकता है। किशोरावस्था में समूह दबाव के कारण गलत रास्ते पर जाने की संभावना बढ़ जाती हैं। अधिकतर किशोरी–किशोरी अपनी बात बेहिचक नहीं कह पाते और अनजाने डर और भ्रान्तियाँ पालते रहते हैं। ऐसी स्थितियों में महिला–पिता और बच्चों के प्रति संवेदनहीनता की स्थिति आ जाती है। ऐसा यौन शिक्षा के पर्याप्त ज्ञान के अभाव में होता है। हमारे देश में 90 प्रतिशत से अधिक नवयुवक और नवयुवतियों को यौन सम्बन्धी जानकारी अयोग्य व्यक्तियों अथवा गलत सूत्रों से प्राप्त होती हैं। यह हमारे जीवन की सफलता में बहुत बड़ी बाधा हैं। इससमें कोई सन्देह नहीं है कि यौन शिक्षा हमारे किशोर–किशोरियों और युवक–युवतियों के लिए एक समान आवश्यक है। स्त्री पुरूषों के शरीर और यौवन के बारे में, अपनी युवा पीढ़ी से उनके महिला–पिता जो कुछ कहना चाहते है, लेकिन कुछ कह नहीं पाते। यौन शिक्षा जैसे विषय पर किशोर–किशोरियों को जानकारी प्रदान करना आसान नहीं है। इसका अध्ययन विस्तृत स्तर पर होना आवश्यक है। जीवन के तथ्यों से देर–सवेर सभी को परिचित होना पड़ता है। यौन संबंधी शिक्षा वैज्ञानिक विधि से उचित आयु में मिले तो अवश्य ही कल्याणकारी होगा। अन्यथा पहले की तरह हमारे होनहार नवयुवक और नवयुवितयां, गली–मौहल्ले के अनधिकारी व्यक्तियों से ही यौन संबंधी बेसिर–पैर की बातें सुनकर गुमराह होते रहेंगें।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत विकासशील देश है, वर्तमान भारतीय समाज विकास की ओर उन्मुख हैं। प्रजातन्त्रीय शासन व्यवस्था, धर्म निरपेक्षता स्वतन्त्रता समानता तथा मातृत्व जैसे सामाजिक मूल्य आज के युग की अपेक्षाएं है। जहाँ समता की बात करते है, वहाँ सभी को समान समझने की बात आती है। जब स्त्री और पुरूष दोनों को समान समझा जायेगा तो निश्चित रूप से उनके विकास के साधन भी समान ही अपनाये जायेंगें, इसलिए जहाँ हम पुरूष वर्ग को शिक्षित करने की बात सोचते है, वही हम नारी शिक्षा की अपेक्षा नहीं कर सकते। यह तो स्पष्ट है कि आज यौन शिक्षा की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी की शिक्षा की, क्योंकि यौन शिक्षा परिवार की मान मर्यादाओ, कुशलताओं और शांतिपूर्ण व्यवस्था तथा वर्तमान में अधकचरे शारीरिक एवं मानसिक ज्ञान के अधिक यौन शिक्षा उत्तरदायी है। इस दृष्टि से तो यौन शिक्षा के समान ही नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक महान है, तभी तो कहा गया है। पश्चिमी विचारक ने कहा है– ''अगर आप एक बच्चे को यौन शिक्षा पढ़ाते है, तो आप एक ही व्यक्ति का निर्माण करते है और यदि आप एक लड़की को पढ़ाते है तो आप एक परिवार को पढ़ाते है। राष्ट्र के निर्माण में नारी की भूमिका के संदर्भ में कहा गया है कि आप मुझे साठ पढ़ी–लिखी महिलाएँ दे दों, मैं आपका एक अच्छा राष्ट्र द्रूंगा। इन कथनों का सारांश यही है कि हमें लड़कियों के विद्यालय में दी जाने वाली यौन शिक्षा से सम्बन्धित लोगों की अलग–अलग धारणाएँ है। कुछ बन्द समाज के लोगों की धारणा है कि लड़कियों का क्षेत्र घर की चार दीवारी के अन्दर ही होता है। कुछ भारतीय कट्टर पंथियों का विश्वास है कि यदि नारी को यौन शिक्षा दे दी गई तो वह बिगड़ जायेगी। शंकराचार्य जैसे विद्वान ने भी नारी शिक्षा की अपेक्षा ही की है। उन्होनें तो यह तक कह दिया है कि ''नर्क का द्वार ही नारी है।''

समस्या कथन

शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1 मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति की महिलाओं का चयन करना।
2 यौन शिक्षा के सम्पूर्ण दायरे का पता लगाना।

3 यौन शिक्षा के प्रति मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की महिलाओं के दृष्टिकोण का पता लगाना।
4 यौन शिक्षा के प्रति मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की शहरी ग्रामीण महिलाओं के दृष्टिकोण की परस्पर तुलना करना।
5 अशिक्षित महिलाओं का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को बदलना।

शोध की परिकल्पनाएँ

मध्यम सामाजिक आर्थिक की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण शून्य है।

शोध का परिसीमन

शोध का क्षेत्र बहुत व्यापक और विस्तृत होता है, समय और शोध अध्ययन को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार से परिसीमन हो गया है।

जिलेवार– प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान के सीकर जिले तक ही सीमित रखा गया है।

स्थितिवार–प्रस्तुत शोधकर्त्ता में मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की महिलाओं तक सीमित रखा गया है।

लिंगवार– प्रस्तुत शोध कार्य केवल महिलाओं तक सीमित रखा गया है।

शिक्षावार– प्रस्तुत शोध कार्य में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं तक ही सीमित रखा गया है।

न्यादर्श– न्यादर्श के चयन में राजस्थानर के सीकर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं को शामिल किया गया है। शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं में 120–120 महिलाओं का चयन किया गया है, जिसमें 120 ग्रामीण क्षेत्र की तथा 120 शहरी क्षेत्र की महिलाएं।

विधि–प्रविधि–

प्रस्तुत शोधकर्त्ता में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रयोग हेतु चयनित महिलाओं के समुह पर यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण जानने हेतु विभिन्न शहरी और ग्रामीण क्षेत्र से सम्पर्क किया गया तथा उनकी अनुमति से प्रश्नावली भरवाई गई और यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का जांचा गया।

दत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

दत्तों को विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी तथ्यों का विभिन्न प्रविधियां के संकलन के पश्चात विश्लेषण व्याख्या एवं निष्कर्ष के लिए निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया।

1. प्रतिशत
2. काई वर्ग मान

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधपूर्ण ने यौन शिक्षा के प्रति शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के दृष्टिकोण को जांचने के लिए कोई उपकरण न होने के कारण शोधार्थी ने यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया। इस प्रश्नावली में कुल 40 प्रश्न है, जो कि यौन शिक्षा की आवश्यकता, यौन शिक्षा प्रदान करने में महिलाओं का योगदान, यौन शिक्षा हेतु समायानुसार को जानना, यौग शिक्षा प्रदान की जाये तथा इसमें क्या–क्या कब प्रदान की जाये तथा उसमें क्या–क्या विषम सम्मिलित किए जाए आदि विषयों का संबंधित प्रश्न कर।

विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

- मध्यम सामाजिक स्थिति
- शिक्षित महिलाएं
- अशिक्षित महिलाए
- मध्यम आर्थिक स्थिति
- यौन शिक्षा

चयनित न्यादर्श के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के प्राप्तांकों का प्रतिशतवार विश्लेषण।

प्रश्नावली के आयाम परीक्षण	1	2	3
शहरी	94.8	98.4	99.8
ग्रामीण	36.0	54.4	39.6
अन्तर	58.8	42.0	60.2

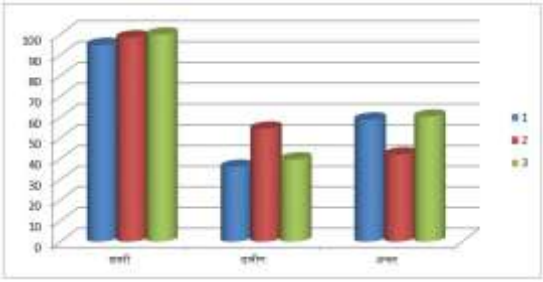

सीकर जिले के चयनित समूह के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की कुल महिलाओं के परीक्षण के आयामानुसार प्राप्तांकों की स्थिति को ग्राफ नम्बर 1 में ^{x} अक्ष पर प्रश्नावली के आयाम तथा ^{y} अक्ष पर प्राप्तांकों के प्रतिशत को दर्शाया गया है।

व्याख्या–

तालिका क्रमांक 1 यह प्रदर्शित करता है कि आयाम नं. 1 जो ''यौन शिक्षा कब'' से संबंधित है। शहरी क्षेत्र की महिलाओं की यौन शिक्षा कब के प्रति दृष्टिकोण 94.8 प्रतिशत है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में यह प्रतिशत 36.0 है, जो कि शहरी क्षेत्र से 58.8 प्रतिशत कम है।

आयाम नं. 2 ''यौन शिक्षा कैसे'' से संबंधित है। शहरी क्षेत्र में यौन शिक्षा कैसे का 98.4 प्रतिशत है तथा ग्रामीण क्षेत्र में यह प्रतिशत 56.4 है, शहरी क्षेत्र में यह 42 प्रतिशत अधिक पाया गया।

आयाम नं. 3 ''यौन शिक्षा की आवश्यकता'' से संबंधित है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र का 39.6 प्रतिशत है, जबकि शहरी क्षेत्र का 99.8 इसका अन्तर 60.2 प्रतिशत है।

वर्तमान लघु शोध में यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण से संबंधित प्रश्नावली द्वारा सर्वेक्षण किया गया। इस प्रश्नावली का चयनित न्यादर्श के अनुसार शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का प्रभाव देखा गया। कुल शहरी शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के प्राप्तांकों की गणना अनुसार प्रतिशतवार विश्लेषण तालिका संख्या 4.2 में प्रदर्शित किया गया है।

निष्कर्ष

सीकर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को जानने हेतु शोधकर्त्ता ने स्वनिर्मित उपकरण प्रश्नावली को चयनित समूह की महिलाओं प्रशासित किया और दत्त एकत्रित किए। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले गए, जो निम्न प्रकार है–

सीकर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं से प्राप्त दत्तों के विश्लेषण के निष्कर्ष– यौन शिक्षा कब– इस आयाम में शहरी क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के प्राप्तांकों का प्रतिशत 94.8 और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का प्राप्तांकों का प्रतिशत 36.0 था। दोनों में अन्तर 58.8 प्रतिशत पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है। यौन शिक्षा कब के प्रति महिलाओं के दृष्टिकोण का प्रभाव नजर आया। काई वर्ग की सार्थकता हेतु सार्थकता परीक्षण करने पर 005 स्तर पर सार्थक होने से शून्य परिकल्पना का अस्वीकृत किया गया।

शोध कार्य को प्रभाव बनाने के सुझाव

शोधाथी ने अपने शोध कार्य हेतु यौन शिक्षा के प्रति शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का दृष्टिकोण का सर्वेक्षण किया। यौन शिक्षा की प्रात्येक समाज को, प्रत्येक वर्ग को आवश्यकता है। शोधकर्त्ता ने ऐसा अनुभव किया। जो ज्ञान महिलाओं को है, वह पर्याप्त नहीं है। अतः शोधार्थी ने यौन शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव दिया, जो निम्न है–

1 महिलाओं में स्वास्थ्य शिक्षा के अन्तर्गत यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की जानी चाहिए।
2 महिलाओं को यौन शिक्षा के लाभों से परिचित कराना आवश्यक है, जो इस ओर उदासीन है, उनकी सोच को बदलकर ही महिलाओं को विशेषकर अशिक्षित वर्ग को प्रेरित किया जा सकता है।

3 समय–समय पर पिछड़े क्षेत्रों में यौन संबंधी शिक्षा के शिविर लगाये जाए।

4 महिलाओं की यौन शिक्षा में अहम भूमिका होती है, इसके लिए हमें भी हर वर्ग की महिलाओं को प्रेरित करने की आवश्यकता है, ताकि वे अपनी सन्तान के लिए यौन संबंधी शिक्षा के प्रति जागरूक रहे।

5 यौन शिक्षा के संबंध में लोगों की सोच को बदलना होगा तथा कथनी एवं करनी के अन्तर को समाप्त करना होगा, तभी इस कार्यक्रम में सफलता मिल जाएगी।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. इसी शोध कार्य को बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध में शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं को आयु और जाति के आधार यपर विभक्त करके शोध कार्य किया जा सकता है।
3. वर्तमान शोध कार्य शोधार्थी ने केवल सीकर जिले तक ही सीमित रखा है। भविष्य में यदि विषय पर शोध कार्य किया जाता है, तो सीकर जिले के अतिरिक्त अन्य जिलों को भी शामिल किया जा सकता है।
4. यौन संबंधी शिक्षा की दिशा और दशा पर भी अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता है।
5. यौन शिक्षा के प्रति पिता के दृष्टिकोण पर भी अनुसंधान कार्य किया जा सकता है।
6. उच्च सा.आ. स्तर की महिलाओं को भी शामिल करने की आवश्यकता है।
7. घरेलू और कामकाजी महिलाओं का यौन शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर शोध किया जा सकता है।
8. स्मय सीमा कम होने के कारण शोधार्थी के लिए बड़ा न्यादर्श लेना संभव नहीं हो सकता। अतः आगामी शोधकार्य में न्यादर्श का आकार बड़ा लिया जा सकता है, जिससे किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकें।

शोध की शैक्षित निहितार्थ

प्रस्तुत शोध में यौन शिक्षा के प्रति शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन है। इसके द्वारा हम महिलाओं की यौन शिक्षा शिक्षा में और अधिक भागों को जानकर उनकी व्यवस्था कर सकते है तथा इनकी शिकायतों को जानकर उन्हें दूर करने की कोशिश की जा सकती है तथा शिक्षात्मक संस्थाओं का वातावरण स्वच्छ बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा आर.ए. : शिक्षा अनुसंधान, मेरठ

एस.पी. सुखिया : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व

डॉ. आर.पी. भटनागर : शिक्षा अनुसंधान

डॉ. आर. ए. शर्मा : शिक्षा तकनीकी

डॉ. महिला प्रसाद शर्मा : शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत में शिक्षा

दामोदर शर्मा : शिक्षा और भारतीय समाज

डॉ. राम पाल सिंह शर्मा : अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार

डॉ. एस.एस. माथुर : शिक्षा मनोविज्ञान

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय : विभाग में शिक्षा अनुसंधान